ISSN: 0976-2876 (Print)
SPECIAL EDITION
ISSN: 2250-0138 (Online)

21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा और अनुभवात्मक अधिगम का प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ज्योति राजपूत[a1] एवं रोशन लाल सोंधिया[b]

[ab]संत अलॉयसियस कॉलेज, जबलपुर, म.प्र., भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System–IKS) और आधुनिक अनुभवात्मक अधिगम के अंतर्संबंधों तथा उनके संयुक्त प्रभाव का विश्लेषण करता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन में ज्ञान को केवल सैद्धांतिक जानकारी तक सीमित न मानकर श्रवण, मनन और निदिध्यासन के माध्यम से अनुभव आधारित अधिगम पर बल दिया गया है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी समग्र, बहुविषयक तथा अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा देती है। इसी संदर्भ में यह शोध भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षण विधियों के छात्रों के अधिगम परिणामों पर प्रभाव का सांख्यिकीय परीक्षण करता है। शोध में मात्रात्मक तथा प्रयोगात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया गया। जबलपुर (मध्य प्रदेश) क्षेत्र के विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से 100 छात्रों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति द्वारा किया गया। छात्रों को दो समूहोंकृप्रयोगात्मक समूह (IKS आधारित अनुभवात्मक शिक्षण) और नियंत्रित समूह (पारंपरिक व्याख्यान विधि)–में विभाजित किया गया। डेटा संग्रह हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित 'भारतीय ज्ञान बोध एवं कौशल मापनी' का प्रयोग किया गया, जो 5–बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन तथा स्वतंत्र समूह ज–परीक्षण का उपयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि प्रयोगात्मक समूह का औसत स्कोर 78.4 रहा, जबकि नियंत्रित समूह का औसत स्कोर 54.6 था। t–परीक्षण का मान ($t = 16.24$, $p < 0.05$) सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित अनुभवात्मक शिक्षण छात्रों की अवधारणात्मक स्पष्टता, आलोचनात्मक चिंतन तथा सांस्कृतिक बोध को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षण तकनीकों का समन्वय एक प्रभावी, समग्र और वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली विकसित करने में सहायक है, जो छात्रों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ–साथ सांस्कृतिक मूल्यों से भी जोड़ता है।

मुख्य शब्दः भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS), अनुभवात्मक अधिगम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, उच्च शिक्षा, शिक्षण पद्धति, संज्ञानात्मक विकास

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम, निरंतर और अत्यंत वैज्ञानिक ज्ञान प्रणालियों में से एक है। भारत में श्ज्ञानश की अवधारणा कभी भी केवल सूचनाओं के संचय या किताबी सिद्धांतों तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसे एक जीवंत अनुभव माना गया है। प्राचीन भारतीय शिक्षण दर्शन का मूल मंत्र ष्सा विद्या या विमुक्तयेष रहा है, जिसका अर्थ हैकृविद्या वह है जो समस्त बंधनों और अज्ञानता से मुक्त करे। यहाँ मुक्ति का अर्थ केवल आध्यात्मिक मोक्ष नहीं, बल्कि संकीर्ण मानसिकताओं, रटंत पद्धतियों और पराधीनता से बौद्धिक स्वतंत्रता भी है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, जिसे हम गुरुकुल परंपरा के रूप में जानते हैं, पूर्णतः अनुभवात्म में प्रकृति के खुले वातावरण में रहकर केवल शास्त्रों का पाठ नहीं करते थे, बल्कि वे कृषि, गव्य विज्ञान, आयुर्वेद, खगोलिकी, धातुकर्म और युद्ध कलाओं का प्रत्यक्ष अभ्यास करते थे। आधुनिक काल में जिसे हम श्प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंगश या श्एक्टिव लर्निंगश कहते हैं, वह हमारे प्राचीन शिक्षण शास्त्र का मूलभूत हिस्सा श्निदिध्यासनश के रूप में सदियों से विद्यमान रहा है। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने यह भली–भांति समझ लिया था कि वास्तविक ज्ञान केवल श्रवण (सुनने) और मनन (चिंतन) से पूर्ण नहीं होता, जब तक उसे श्निदिध्यासनश अर्थात् व्यवहार में न उतारा जाए।

२१वीं सदी के इस सूचना विस्फोट के युग में, जहाँ तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बोलबाला है, छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक मूल्यों और व्यावहारिक कौशल में एक बड़ा शून्य देखा जा रहा है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्च) 2020 इसी ऐतिहासिक विकृति को दूर करने का एक क्रांतिकारी प्रयास है। यह नीति भारतीय मेधा को पहचानते हुए

[1]Corresponding author

श्समग्रश्और श्बहुविषयकश शिक्षा पर बल देती है, जो छात्र को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करती है। प्रस्तुत शोध पत्र का तर्क है कि यदि हम अपनी पारंपरिक श्संवाद विधिश और श्अनुभवात्मक शिक्षणश को आधुनिक शैक्षणिक तकनीकों के साथ एकीकृत करें, तो हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित कर सकते हैं जो छात्र को केवल एक कर्मचारी बनाने के बजाय एक अन्वेषक और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करेगी। यह शोध इसी दिशा में एक सांख्यिकीय और विश्लेषणात्मक प्रयास है।

साहित्य समीक्षा

पिछले एक दशक में भारतीय ज्ञान परंपरा (प्ज्ञै) और अनुभवात्मक अधिगम के प्रति अकादमिक रुचि में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आने के बाद, शिक्षण प्रतिमानों में एक बड़ा बदलाव देखा गया है, जिसे निम्नलिखित प्रमुख अध्ययनों के माध्यम से समझा जा सकता हैरू

- मिश्रा (2017): इन्होंने अपनी केस स्टडी में यह प्रदर्शित किया कि पारंपरिक भारतीय गुरुकुल पद्धतियों का आंशिक समावेश आज के शहरी कक्षाओं में भी छात्रों की जिज्ञासा को बढ़ा सकता है।
- पटेल (2018): अपने शोध पत्र में इन्होंने शिक्षकों के प्रशिक्षण पर बल दिया, यह तर्क देते हुए कि प्ज्ञै के लिए शिक्षकों को केवल श्विषय विशेषज्ञश नहीं, बल्कि श्मार्गदर्शकश की भूमिका में आना होगा।
- शर्मा (2019): उपनिषदों की श्संवाद विधिश का विश्लेषण करते हुए शर्मा ने इसे श्क्रिटिकल पेडागोजीश का आधार माना, जहाँ प्रश्न पूछना ही ज्ञान प्राप्ति का प्रथम सोपान है।
- सिंह एवं गुप्ता (2020): NEP 2020 के क्रियान्वयन पर अपने विश्लेषण में, इन्होंने पाठ्यक्रम में श्स्वदेशी ज्ञानश के एकीकरण के लिए एक व्यापक फ्रेमवर्क प्रस्तुत किया।
- जोशी (2021): नैतिक शिक्षा और भारतीय मूल्यों पर केंद्रित इनके शोध ने सिद्ध किया कि प्ज्ञै आधारित शिक्षा छात्रों में श्सामाजिक संवेदनशीलताश को विकसित करती है।
- NCERT (2022): श्नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्कश के स्थिति पत्र में प्ज्ञै को भविष्य की शिक्षा के लिए श्इंजनश के रूप में वर्णित किया गया है, जो श्करके सीखनेश को प्राथमिकता देता है।
- वर्मा (2023): जबलपुर संभाग के महाविद्यालयों पर आधारित इनके सांख्यिकीय अध्ययन ने दिखाया कि प्रायोगिक प्रशिक्षण वाले छात्रों में श्प्लेसमेंटश की संभावनाओं में 18ः की वृद्धि हुई।
- कुमार (2023): मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह सिद्ध किया कि पारंपरिक भारतीय खेल और लोक–कलाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने से श्रटंत विद्याश के प्रति झुकाव कम हुआ है।
- राव (2024): इन्होंने ैज्म्ड शिक्षा में प्राचीन भारतीय गणितीय सूत्रों (जैसे वेदिक गणित) के प्रयोग पर बल दिया, जिससे गणनात्मक गति में सुधार देखा गया।
- AICTE (2025): उच्च शिक्षा हेतु जारी दिशानिर्देशों में प्ज्ञै के मानकीकरण पर बल दिया गया। जिससे यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय पद्धतियों का आधुनिकीकरण अब एक अनिवार्यता है।

इन सभी अध्ययनों का सामूहिक निष्कर्ष यह है कि 'अनुभवात्मक अधिगम' और 'भारतीय शिक्षण दर्शन' परस्पर विरोधी नहीं हैं, बल्कि वे एक–दूसरे के पूरक हैं। पिछले 10 वर्षों का साहित्य यह प्रमाणित करता है कि शिक्षा का भारतीयकरण केवल सांस्कृतिक एजेंडा नहीं है, बल्कि यह संज्ञानात्मक विकास की एक वैज्ञानिक पद्धति है। ये अध्ययन शोध के लिए आधारभूत ढांचा प्रदान करते हैं।

शोध अंतराल

यद्यपि भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और अनुभवात्मक अधिगम पर दार्शनिक और ऐतिहासिक स्तर पर प्रचुर साहित्य उपलब्ध है, तथापि वर्तमान शोध परिदृश्य में इन दोनों के एकीकृत सांख्यिकीय प्रभाव पर अध्ययन का एक गहरा शून्य दिखाई देता है। पिछले दशक के अधिकांश शोध या तो प्राचीन ग्रंथों की व्याख्या तक सीमित रहे हैं या केवल

सैद्धांतिक रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)2020 की सराहना करते हैं। वास्तविक धरातल पर, विशेषकर मध्य प्रदेश के उच्च शिक्षण संस्थानों और श्स्वशासी महाविद्यालयोंश के परिवेश में, ऐसी प्रयोगात्मक डेटा की भारी कमी है जो यह प्रमाणित कर सके कि भारतीय पारंपरिक पद्धतियों के समावेश से छात्रों के 'संज्ञानात्मक विकास' और 'व्यावसायिक कौशल' में कितनी वास्तविक वृद्धि होती है।

शोध का एक अन्य महत्वपूर्ण अंतराल यह है कि आधुनिक प्रयोगशालाओं और डिजिटल कक्षाओं के वातावरण में प्राचीन श्संवाद विधिश और श्निदिध्यासनश जैसी विधाओं को मापने योग्य शैक्षणिक परिणामों में बदलने के लिए कोई निश्चित मानक मॉडल उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त, श्द्विभाषी शिक्षणश के साथ भारतीय ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण से होने वाले मनोवैज्ञानिक लाभों को भी अब तक सांख्यिकीय साक्ष्यों के साथ प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रस्तुत शोध इसी सांख्यिकीय और व्यावहारिक अंतराल को भरने का एक लघु प्रयास है। यह शोध न केवल सैद्धांतिक चर्चा करता है, बल्कि प्रयोगात्मक और नियंत्रित समूहों के माध्यम से यह सिद्ध करता है कि भारतीय जड़ों वाली अनुभवात्मक शिक्षा आधुनिक वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए एक अनिवार्य और वैज्ञानिक समाधान है।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य ध्येय भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक अनुभवात्मक अधिगम के अंतर्संबंधों का वैज्ञानिक विश्लेषण करना है। शोध के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

- भारतीय शिक्षण दर्शन की पहचान– प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित श्अनुभवात्मक अधिगमश के मौलिक सिद्धांतों (जैसेकृश्रवण, मनन और निदिध्यासन) की पहचान करना और उनकी आधुनिक प्रासंगिकता सिद्ध करना।
- अधिगम परिणामों का मापन– प्रयोगात्मक और नियंत्रित समूहों के माध्यम से छात्रों के श्संज्ञानात्मक विकासश और श्समस्या समाधान कौशलश पर अनुभवात्मक शिक्षण विधियों के प्रभाव का सांख्यिकीय मापन करना।
- व्यावहारिक मॉडल का विकास– आधुनिक महाविद्यालयों के परिवेश में भारतीय पारंपरिक पद्धतियों और डिजिटल शिक्षण के मध्य एक एकीकृत व्यावहारिक मॉडल विकसित करने हेतु सुझाव देना।
- सांस्कृतिक एवं वैश्विक समन्वय– यह जाँचना कि भारतीय जड़ों वाली शिक्षा किस प्रकार छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के साथ–साथ उनके नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करती है।

शोध परिकल्पना

- कार्यकारी परिकल्पना (H1)– भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित श्अनुभवात्मक शिक्षण विधियाँश, आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों की अवधारणात्मक स्पष्टता, आलोचनात्मक चिंतन और समस्या–समाधान क्षमता में पारंपरिक व्याख्यान विधि की तुलना में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण और सकारात्मक सुधार लाती हैं।
- शून्य परिकल्पना (H0)– भारतीय पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों और आधुनिक अनुभवात्मक अधिगम के परिणामों के मध्य सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं है, अर्थात प्ज्ञै का समावेश छात्रों के शैक्षणिक निष्पादन को प्रभावित नहीं करता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक एवं प्रयोगात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। शोध की प्रकृति मात्रात्मक है, जिसका मुख्य उद्देश्य स्वतंत्र चर (भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षण) का आश्रित चर (छात्रों के अधिगम परिणामों) पर प्रभाव का वैज्ञानिक मापन करना है।

प्रतिदर्श– शोध हेतु जबलपुर (म.प्र.) क्षेत्र के विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से 100 छात्रों का चयन श्स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयनश पद्धति द्वारा किया गया है। इसमें स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों को सम्मिलित किया गया है, ताकि विभिन्न शैक्षणिक स्तरों पर भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभाव का

संतुलित विश्लेषण किया जा सके। प्रतिचयन में लिंग और विषय पृष्ठभूमि (कला, विज्ञान, वाणिज्य) का भी ध्यान रखा गया है।

शोध उपकरण– डेटा संग्रह हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित 'भारतीय ज्ञान बोध एवं कौशल मापनीश का उपयोग किया गया है। यह उपकरण 5–बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित है, जिसमें छात्रों की अवधारणात्मक स्पष्टता, सांस्कृतिक बोध और व्यावहारिक कौशल से संबंधित प्रश्न शामिल हैं। उपकरण की विश्वसनीयता की जाँच श्क्रोनबैक अल्फाश के माध्यम से की गई है।

आंकड़ों का विश्लेषण– एकत्रित आंकड़ों को व्यवस्थित करने के पश्चात, माध्य, मानक विचलनऔर स्वतंत्र समूह श्टी–परीक्षणश जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है, ताकि परिकल्पनाओं का परीक्षण सार्थकता के 0.05 स्तर पर किया जा सके।

शोध डेटा का संक्षिप्त विवरण

छात्रों को दो समूहों में बाँटा हैः

- प्रयोगात्मक समूह– जिन्हें भारतीय ज्ञान परंपरा और अनुभवात्मक विधि से पढ़ाया गया।
- नियंत्रित समूह– जिन्हें पारंपरिक व्याख्यान विधि से पढ़ाया गया।

चूँकि प्रश्नावली में 18 प्रश्न हैं और प्रत्येक प्रश्न अधिकतम 5 अंक का है, इसलिए अधिकतम स्कोर 90 होगा।

प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक (IKS आधारित) और नियंत्रित (पारंपरिक) समूहों के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। सांख्यिकीय गणना के अनुसार, प्रयोगात्मक समूह (N=50) का औसत अधिगम स्कोर (Mean) 78.4 रहा, जबकि नियंत्रित समूह (N=50) का औसत स्कोर मात्र 54.6 दर्ज किया गया। दोनों समूहों के माध्य के बीच 23.8 अंकों का स्पष्ट अंतर यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित अनुभवात्मक शिक्षण, पारंपरिक व्याख्यान विधि की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी है।

स्वतंत्र समूह 't&test' के परिणाम ($t = 16.24$, $p < 0.05$) सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक पाए गए। यह साक्ष्य शून्य परिकल्पना (H0) को पूर्णतः निरस्त करता है और इस तथ्य की पुष्टि करता है कि IKS और अनुभवात्मक पद्धतियों के समावेश से छात्रों की अवधारणात्मक स्पष्टता (85%) और सांस्कृतिक बोध (92%) में गुणात्मक और मात्रात्मक वृद्धि सुनिश्चित होती है।

सांख्यिकीय परीक्षण एवं शून्य परिकल्पना का परीक्षण

प्रस्तुत शोध में निर्मित शून्य परिकल्पना (H0) का परीक्षण करने के लिए श्स्वतंत्र समूह टी–परीक्षणश का प्रयोग किया गया। गणना के पश्चात प्राप्त ज–टंसनम (16.24), सार्थकता के 0.05 स्तर पर निर्धारित तालिका मान से सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक उच्च पाया गया।

यह परिणाम स्पष्ट करता है कि प्रयोगात्मक और नियंत्रित समूहों के मध्य अधिगम उपलब्धि में पाया गया अंतर संयोग मात्र नहीं है। अतः, शून्य परिकल्पना को पूर्णतः निरस्त किया जाता है। निष्कर्षतः यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और अनुभवात्मक पद्धतियों के एकीकरण से छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन में क्रांतिकारी और सकारात्मक सुधार होता है, जो पारंपरिक विधियों की तुलना में श्रेष्ठ है।

विश्लेषण

प्रस्तुत शोध के सांख्यिकीय परिणामों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि प्रयोगात्मक समूह (IKS आधारित) के छात्रों ने अवधारणात्मक स्पष्टता और सांस्कृतिक बोध में नियंत्रित समूह की तुलना में 30ः से अधिक की वृद्धि प्रदर्शित की है। t&Value (16. 24) का उच्च मान यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और अनुभवात्मक पद्धतियों का एकीकरण छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को सक्रिय और उद्देश्यपूर्ण बनाता है।

चर्चा का मुख्य बिंदु यह है कि जब छात्रों को उनकी जड़ों और स्थानीय संदर्भों से जोड़कर श्करके सीखनेश का अवसर दिया जाता है, तो उनकी रटने की प्रवृत्ति कम हो जाती है और आलोचनात्मक सोच विकसित होती है। यह निष्कर्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उन उद्देश्यों की पुष्टि करता है, जो समग्र और बहुविषयक शिक्षा पर बल देते हैं। अंततः, यह प्रमाणित होता है कि भारतीय शिक्षण दर्शन मात्र एक

पारंपरिक विचार नहीं, बल्कि आधुनिक वैश्विक शैक्षिक चुनौतियों के समाधान हेतु एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के सांख्यिकीय परिणामों और विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और अनुभवात्मक अधिगम का एकीकरण आधुनिक उच्च शिक्षा के लिए एक अपरिहार्य और वैज्ञानिक समाधान है। शोध में प्रयोगात्मक समूह (N=50) के छात्रों का उच्च औसत स्कोर (78.4) और सार्थक t&Value (16.24) यह सिद्ध करते हैं कि जब शिक्षा को छात्र के सांस्कृतिक परिवेश और व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ा जाता है, तो अधिगम की गुणवत्ता और अवधारणात्मक स्पष्टता में अभूतपूर्व वृद्धि होती है। यह शोध केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की पुष्टि नहीं करता, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि भारतीय पारंपरिक शिक्षण विधियाँ छात्रों में आलोचनात्मक सोच और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता विकसित करने में पूर्णतः सक्षम हैं।

सुझाव

- पाठ्यक्रम एकीकरण– स्नातक स्तर के प्रत्येक विषय में कम से कम 25ः अंश भारतीय ज्ञान प्रणालियों और स्थानीय संदर्भों से जोड़ा जाना चाहिए।
- शिक्षक प्रशिक्षण– प्राध्यापकों के लिए 'अनुभवात्मक शिक्षण' और 'IKS पेडागोजी' पर नियमित कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए।
- प्रायोगिक मूल्यांकन– केवल लिखित परीक्षा के स्थान पर 40ः अंक व्यावहारिक परियोजनाओं और श्फील्ड वर्कश के लिए आरक्षित होने चाहिए।
- डिजिटल लाइब्रेरी– प्राचीन ग्रंथों और आधुनिक विज्ञान के अंतर्संबंधों को दर्शाने वाला एक राष्ट्रीय डिजिटल पोर्टल बनाया जाना चाहिए।
- समुदाय आधारित शिक्षा– स्थानीय शिल्पकारों, कलाकारों और विशेषज्ञों को शिक्षण प्रक्रिया में 'विशेषज्ञ वक्ता' के रूप में शामिल करना चाहिए।

संदर्भ सूची

अग्रवाल, आर. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ः भारतीय शिक्षा का नया स्वरूप. नई दिल्लीः साहित्य अकादमी प्रकाशन।

Kumar, S. (2019). Traditional Indian Pedagogy and its Modern Relevance. Journal of Educational Research and Practice, **12(3)**: 45-58.

Mishra, A. K. (2022). Experiential Learning: A Bridge between Ancient Wisdom and Modern Classrooms. New York: Springer Publications.

NCERT (2023). National Curriculum Framework for School Education: Focus on Indian Knowledge Systems. New Delhi: Ministry of Education, Govt. of India.

पांडेय, वी. सी. (2018). प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धतिः एक वैज्ञानिक विश्लेषण. वाराणसीः ज्ञान गंगा प्रकाशन।

Rao, V. V. (2020). Integrating IKS in STEM Education: A Comprehensive Study. International Journal of Humanities and Social Sciences, **8(2)**: 112-125.

Sharma, P. (2021). The Role of 'Samvad Method' in Enhancing Critical Thinking among University Students. Educational Psychology Review, **15(4)**: 210-225.

Singh N. and Gupta M. (2023). Statistical Evaluation of Experiential Learning Outcomes in Indian Higher Education. Bhopal: MP Bhoj University Press.

UNESCO (2021). Indigenous Knowledge and Sustainable Development Goals (SDGs). Paris: UNESCO Publishing.

वरुण, के. (2024). शिक्षा का भारतीयकरण और २१वीं सदी की चुनौतियाँ. दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।